Bhavini

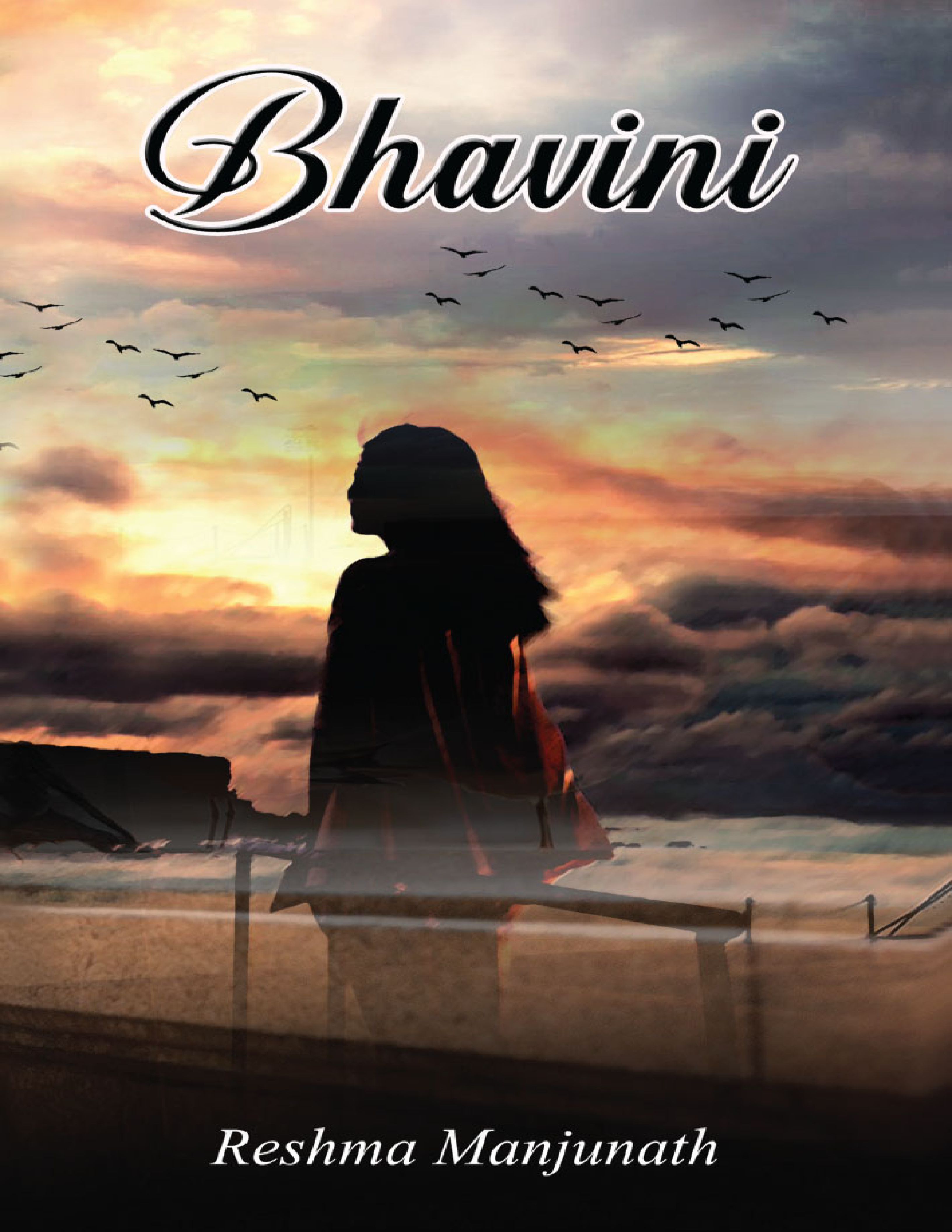

Reshma Manjunath

Copyright © 2020, Reshma Manjunath
All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system now known or to be invented, without permission in writing from the publisher, except by a reviewer who wishes to quote brief passages in connection with a review written for inclusion in a magazine, newspaper or broadcast.

Published in India by Prowess Publishing,
YRK Towers, Thadikara Swamy Koil St, Alandur,
Chennai, Tamil Nadu 600016

ISBN: 978-81-945554-8-3
eISBN: 978-81-945554-9-0

Library of Congress Cataloging in Publication

अभिस्वीकृत

मैं उन सभी की बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने समय पर मेरी पुस्तक को पूरा करने में मेरी सहायता की है। पहले मैं अपने पति के सहयोग के लिए विशेष रूप से आभारी हूँ कि काफी व्यस्त रहने के बावजूद भी उन्होंने मुझे पुस्तक लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके साथ ही मैं अपने माता-पिता और मित्रों की भी आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को पूरा करने में मेरी सहायता की है।

यह कहानी किसी विशेष जाति, धर्म या व्यक्ति के बारे मे नहीं है यह एक सच्ची घटना पर आधारित हैं।

****** धन्यवाद। *******

भाविनी

भाविनी एक ऐसी कहानी है, जहाँ जाति का भेदभाव आज भी चल रहा है। इस कहानी का शीर्षक भाविनी कथा वस्तु की मूल संवेदना के निकट है। भाविनी शीर्षक से अंत तक कहानी की संवेदना में व्याप्त है। इससे कहानी को हम आगे बढाएंगे।

भाविनी की कहानी दिल को छू जाती है। और बहुत सुन्दर तरीके से चित्रण गया है।

साराशं: भाविनी एक ऐसी कहानी है, जहाँ आजकल के ज़माने में भी जाति का भेदभाव नही मिटा। यह समाज में आग के प्रलय जैसा फैलता जा रहा है। यह कहानी जीवन के तथ्यो को उजागर करने में सक्षम है। कहानी के आरम्भ में आपको एक रेल की पटरी दिखाई देती है। रेल की पटरी के दोनो तरफ दो गाँव बसे है। एक तरफ भाविनी का परिवार रहता है और दूसरी तरफ रोहित के परिवार के लोग रहते है। एक तरफ तेलुगु वासी और दूसरी तरफ तमिल लोग रहते है। इंडिया-पाकिस्तान की बॉर्डर जैसा हमें दिखता है। यहाँ कहानी की शुरुआत होगी। भाविनी एक मध्यम वर्ग में रहने वाली एक लड़की का नाम है और वह एक अन्य जाति के लड़के से शादी करती है। उसे बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता हैं। इससे हमें यह पता चलता है कि जाति का भेदभाव कभी भी खत्म नहीं होगा और साथ ही ये लोग नही मानते है कि हम सभी मनुष्य हैं, हम सब भारतीय हैं। लेकिन यह सब छोड़कर कुछ लोग जाति के पीछे पड़े रहते है। हम यदि गली गली में भी जाकर प्रचार भी करे तब भी ये लोग कभी नही सुधरेंगे।

भाविनी एक ऐसी कहानी है जहाँ भाविनी का जीवन बहुत दुख से भरा हैं।

भाविनी के पिता का नाम योना था और माँ का नाम मीना था। योना फ़ौज में काम करने वाले एक ईमानदार सैनिक थे। वे दिखने में बहुत गुस्से वाले थे। उनका रंग बहुत काला था। आँख लाल और दिखने में बहुत भयंकर थे। वे बहुत सीदे साधे भी थे। जब योना का ट्रांसफर जम्मु में हुआ, उसी समय योना का विवाह मीना नामक एक युवती से हुआ। मीना दिखने में बहुत सुंदर थीं। मीना योना के रंग को देखकर डरती थी। योना दिखने में कठोर थे लेकिन उनका गुण गुलाब जैसा था। दोनों की कुछ ही दिनों में शादी हो गयी। शादी के बाद योना को पत्नी मीना को भी अपने साथ जम्मु कश्मीर ले जाना पड़ा। मीना तो पढी लिखी नहीं थी, उसे अपनी मातृ भाषा के अलावा और कोई भाषा नही मालूम थी। योना और मीना का जीवन बहुत सुखद था। दोनों के बीच बहुत प्यार था। दो साल बाद उन्हें एक बच्चा पैदा हुआ और उस बच्चे का नाम भाविनी रखा गया। भाविनी की मातृ भाषा तेलुगु थी और उसका धर्म ईसाई था। ये लोग ज्योतिषी में विश्वास नहीं करते थे। एक दिन अचानक योना की एक बाबा से मुलाकात हुई। बाबा योना को देखकर बोले “आपका नाम ‘य’ से आरांभ होता है और आप धर्म से ईसाई है”। योना को हैरानी हुई और बाबा की बात को ध्यान से सुनने लगा। अंत में बाबा ने योना से कहा “आपको चार बच्चे होंगे। उनमें से एक बच्चा मर जाएगा और दूसरा बच्चा किसी अन्य जाति में विवाह करेगा”। इस बात को सुनकर योना को गुस्सा आया और बाबा से बोले “आप यहाँ से जल्दी चले जाइए नहीं तो मुझे आपको भगाना पड़ेगा। आप की उम्र की वजह से मैं चुप हूँ”। योना ने बाबा से कहा “आजकल तो नकली बाबा बहुत होते है”। जाते जाते बाबा योना से कहते है, “आपको मेरी बात पर विश्वास नही है। एक दिन आप मुझे जरूर याद करेंगे, और आप उस दिन मेरी बातो पर यकीन करेंगे। मुझे भगाने से वो बात तो झूठी नहीं होगी। सच तो कभी झूठ नही बन सकता। भगवान जो लिखते है उसे हम कभी नहीं बदल सकते”। योना गुस्से से घर पहुँचा और सारी बाते मीना को बताई। मीना बोलीं “छोड़ दीजीए, आप क्यों उदास है, आजकल के बाबा तो झूठे है और यह झूठ सच नहीं बन सकता”। लेकिन यह बाबा की बात से ही पूरी कथा चलेंगी।

भाविनी की उम्र अब तीन साल की है। उसके अभी स्कूल जाने का समय आ गया। अब उसका दाखिला एक सैनिक स्कूल में हो गया। भाविनी अब स्कूल जाने लगी। वह पढने लिखने में बहुत तेज़ थी। एक दिन स्कूल में उसने भाषण की प्रतियोगिता में भाग लिया। उसे प्रथम स्थान मिला था। इससे योना और मीना अपनी बेटी को भगवान का वरदान मानने लगे। भाविनी को अंग्रेजी और हिन्दी बोलना आता था। मीना और योना भाविनी के व्यवहार से बहुत खुश थे। एक साल बाद योना का चेन्नई तबादला हुआ। उन्हें चेन्नई जाना पड़ा। आरम्भ में योना और उनके परिवार वालों को तमिल नहीं मालूम थी। बाद में तमिल सीख गए। कुछ ही वर्ष में मीना को तीन बच्चे पैदा हुए। उन बच्चो के नाम थे, श्याम, किरण और मुन्नी। जब भाविनी दस साल की थी, दोनों भाई की उम्र थी, सात और पांच साल और मुन्नी तीन साल की थी। भाविनी अपने भाई-बहन की अच्छी तरह देखभाल करती थी। मीना के चार बच्चो में से भाविनी बहुत बुद्धिमान थीं। हमेशा उसके माता व पिता भाविनी को ही बधाई देते रहते थे। भाविनी का छोटा भाई किरण पढने लिखने में कमजोर था। लेकिन किरण को फ़ौज में भेजना चाहते थे ताकि उसका जीवन बहुत अच्छा बने। उसका बड़ा भाई श्याम बहुत अच्छा लड़का था।

उसका व्यहार बहुत ही अच्छा था। एक दिन मई महीने की गर्मी की छुट्टियों में भाविनी ओर उसके मित्र कब्बड़ी खेल रहे थे। इस खेल में दो दल के बच्चे खेल रहे थे। उन बच्चो के बीच झगडा हुआ। एक दल में भाविनी के गली के बच्चे थे और दूसरे दल मे रेल के पटरी के दूसरे तरफ रहने वाले बच्चे थे। एक दल के बच्चे तमिल बोलने वाले थे और दूसरे दल मे तेलुगु बोलने वाले बच्चे थे। बच्चे तो भगवान का रूप होते है। बच्चे खेलते है और कभी झगड़ा भी करते है और फिर से मिलजुल कर रहते। इसमें बडो को बच्चों के छोटे छोटे झगडो में कभी नहीं आना चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। दोनों तरफ के बडो के बीच इतना झगड़ा हुआ जैसे इंडिया और पाकिस्तान। बाद में मीना घर आकर भाविनी को खूब चिल्लाई और बोली कि “वे लोग तो दूसरी भाषा बोलने वाले बच्चे है और उनके साथ कभी नहीं खेलना, नही तो तुम्हें मारूंगी”। बेचारी भाविनी ने उन बच्चो के

You’ve Just Finished your Free Sample

Enjoyed the preview?

Buy: http://www.ebooks2go.com